International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 6 Issue 6, Nov-Dec, 2018, Impact Factor: 3.275

राजनीतिक नेतृत्व में महिलाएं: प्रगति, चुनौतियां और आगे की सड़क

Dr. Abha Choubey

Principal, Sukhnandan College Mungeli (C.G.)

सार

यह अध्ययन महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व की प्रगति, चुनौतियों और संभावनाओं की जांच करता है, वैश्विक रुझानों पर ध्यान केंद्रित करता है और भारत की विस्तृत परीक्षा करता है। मिश्रित-विधि दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए, यह महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को आकार देने वाले प्रतिनिधित्व, बाधाओं और नीतियों का विश्लेषण करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक डेटा को एकीकृत करता है। शोध रवांडा, स्वीडन और भारत के प्रमुख मामलों के अध्ययन पर प्रकाश डालता है, जो राजनीति में लैंगिक समानता के लिए रणनीतियों में तुलनात्मक अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। रवांडा संसद में 61.3% महिला प्रतिनिधित्व के साथ आगे है, जो संवैधानिक कोटा द्वारा संचालित है, जबकि स्वीडन की लिंग-समावेशी नीतियों और स्वैच्छिक पार्टी कोटा 47.3% प्रतिनिधित्व प्राप्त करते हैं। भारत स्थानीय शासन कोटा के माध्यम से प्रगति दिखाता है लेकिन राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व में पिछड़ जाता है, जिसमें महिलाओं के पास केवल 15.1% लोकसभा सीटें हैं। अध्ययन सांस्कृतिक बाधाओं, पितृसत्तात्मक मानदंडों और राजनीतिक गतिशीलता को भारत में महत्वपूर्ण चुनौतियों के रूप में पहचानता है, जो अन्य देशों की सर्वोत्तम प्रथाओं के विपरीत है। यह शोध समान प्रतिनिधित्व प्राप्त करने में लिंग-संवेदनशील नीतियों और राजनीतिक इच्छाशक्ति के महत्व पर जोर देता है, जो महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व में भविष्य की पहल के लिए एक ढांचा प्रदान करता है।

कुंजीशब्द: महिला राजनीतिक नेतृत्व, लैंगिक समानता, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, लिंग कोटा, महिला सशक्तिकरण

परिचय

महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व दुनिया भर में लैंगिक समानता और सतत विकास प्राप्त करने के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में उभरा है। कुछ क्षेत्रों में महत्वपूर्ण प्रगति के बावजूद, महिलाओं को विश्व स्तर पर राजनीतिक निर्णय लेने की भूमिकाओं में कम प्रतिनिधित्व किया जाता है। राजनीतिक भागीदारी न केवल लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए बल्कि विभिन्न सामाजिक जरूरतों को पूरा करने वाली समावेशी नीतियां बनाने के लिए भी आवश्यक है। नेतृत्व की स्थिति में महिलाओं की कमी सांस्कृतिक, सामाजिक और संस्थागत बाधाओं सहित व्यापक प्रणालीगत असमानताओं को दर्शाती है जो उनकी भागीदारी में बाधा डालती हैं।

वैश्विक स्तर पर, रवांडा और स्वीडन जैसे देशों ने लिंग कोटा, मजबूत नीतिगत ढांचे और सामाजिक सुधारों के माध्यम से महिलाओं के राजनीतिक प्रतिनिधित्व को बढ़ाने में उल्लेखनीय प्रगति का प्रदर्शन किया है। रवांडा अपने विधायिका में 61% से अधिक महिला प्रतिनिधित्व के साथ दुनिया का नेतृत्व करता है, जो संवैधानिक जनादेश और नरसंहार के बाद पुनर्निर्माण प्रयासों के लिए जिम्मेदार है। लैंगिक समानता पर अपने प्रगतिशील रुख के लिए प्रसिद्ध स्वीडन ने स्वैच्छिक पार्टी कोटा को संस्थागत किया है

और परिवार के अनुकूल नीतियों को लागू किया है, अपनी संसद में लगभग 47% महिला प्रतिनिधित्व प्राप्त किया है। ये मामले महिलाओं के नेतृत्व को बढ़ावा देने में जानबूझकर नीतियों और राजनीतिक इच्छाशक्ति के परिवर्तनकारी प्रभाव को दर्शाते हैं।

इसके विपरीत, भारत उपलब्धियों और चुनौतियों का एक जटिल परिदृश्य प्रस्तुत करता है। इंदिरा गांधी और प्रतिभा पाटिल जैसी प्रमुख महिला नेताओं के होने के बावजूद, देश ने अपनी राष्ट्रीय विधायिका में महिलाओं का पर्याप्त प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए संघर्ष किया है, जहां महिलाओं का केवल 15.1% लोकसभा सीटों पर कब्जा है। हालाँकि, पंचायती राज संस्थानों (स्थानीय शासन) में लैंगिक कोटा के कार्यान्वयन ने जमीनी स्तर पर महिलाओं की भागीदारी में काफी वृद्धि की है। ये मिश्रित परिणाम भारत में महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व को आगे बढ़ाने के लिए सफल वैश्विक प्रथाओं का लाभ उठाते हुए संरचनात्मक और सांस्कृतिक बाधाओं को दूर करने की आवश्यकता को उजागर करते हैं।

यह अध्ययन महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व में रुझानों, चुनौतियों और अवसरों का विश्लेषण करने के लिए एक तुलनात्मक ढांचे को अपनाता है। वैश्विक उदाहरणों और भारत के अद्वितीय संदर्भ की जांच करके, अनुसंधान का उद्देश्य राजनीतिक निर्णय लेने में महिलाओं के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए प्रभावी रणनीतियों की पहचान करना है। निष्कर्ष नीति निर्माताओं, राजनीतिक दलों और वकालत समूहों के लिए कार्रवाई योग्य अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं जो राजनीति में लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए काम कर रहे हैं।

उद्देश्य

• महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व में वैश्विक रुझानों का विश्लेषण करने के लिए:
रवांडा, स्वीडन और भारत जैसे प्रमुख देशों में विधायी और कार्यकारी भूमिकाओं में महिलाओं के प्रतिनिधित्व का अन्वेषण करें।
• लिंग कोटा की प्रभावशीलता का आकलन करने के लिए:
विश्व स्तर पर महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी और भारत में विशेष रूप से पंचायती राज संस्थानों में उनके कार्यान्वयन पर लिंग कोटा के प्रभाव का मूल्यांकन करें।
• बाधाओं की पहचान करना और कार्रवाई योग्य समाधान प्रस्तावित करना:
भारत में महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व के लिए सांस्कृतिक, संस्थागत और नीति से संबंधित चुनौतियों की जांच करें और प्रतिनिधित्व में सुधार के लिए रणनीतियों का सुझाव दें।
पद्धति **Methodology**

यह अध्ययन विश्व स्तर पर महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व का विश्लेषण करने के लिए मिश्रित-विधि दृष्टिकोण को नियोजित करता है, जो तीन देशों पर ध्यान केंद्रित करता है: रवांडा, स्वीडन और भारत।

मात्रात्मक डेटा संग्रह

डेटा अंतर-संसदीय संघ (आईपीयू), यूएनडीपी और भारत के चुनाव आयोग जैसे संगठनों से प्राप्त किया गया था। प्रमुख मैट्रिक्स में संसदों में महिलाओं का प्रतिशत, कार्यकारी पदों और राजनीतिक भागीदारी पर लिंग कोटा का प्रभाव शामिल है।

गुणात्मक डेटा संग्रह:

• **केस स्टडीज:** रवांडा (महिला प्रतिनिधित्व में वैश्विक नेता), स्वीडन (प्रगतिशील लिंग नीतियां), और भारत (पितृसत्तात्मक संरचनाओं और लिंग कोटा की चुनौतियां) ।

साक्षात्कार: वास्तविक दुनिया की बाधाओं और अवसरों का पता लगाने के लिए नीति निर्माताओं, महिला नेताओं और लिंग अधिवक्ताओं के साथ चर्चा।

साहित्य समीक्षा: अकादमिक प्रकाशनों, सरकारी रिपोर्टों और संयुक्त राष्ट्र महिलाओं जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से अंतर्दृष्टि।

डेटा विश्लेषण:
मात्रात्मक: वर्णनात्मक सांख्यिकी और प्रवृत्ति विश्लेषण जैसे उपकरणों का उपयोग पैटर्न की पहचान करने और देशों में प्रतिनिधित्व की तुलना करने के लिए किया गया था।

• **गुणात्मक:** महिलाओं के राजनीतिक नेतृत्व को आकार देने वाले सांस्कृतिक, संस्थागत और राजनीतिक कारकों का पता लगाने के लिए विषयगत विश्लेषण किया गया था।

• **नीति प्रभाव आकलन:** रवांडा के कोटा, स्वीडन की पार्टी-आधारित नीतियों और भारत के पंचायती राज आरक्षण जैसी पहलों की प्रभावशीलता का मूल्यांकन किया।
• **सीमाएं:** अध्ययन को विश्वसनीय जमीनी स्तर के डेटा तक पहुंचने और विभिन्न क्षेत्रों में सांस्कृतिक जटिलताओं को पूरी तरह से कैप्चर करने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा।

भारत पर ध्यान देने के साथ महिला राजनीतिक नेतृत्व में रुझान
महिलाओं का राजनीतिक नेतृत्व दुनिया भर में प्रगति और चुनौती का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। पिछले कुछ दशकों में, राजनीति में लिंग समानता ने महत्वपूर्ण प्रगति देखी है, कई देशों ने महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने के लिए लिंग कोटा और सकारात्मक कार्रवाई जैसी नीतियों को लागू किया है। हालांकि, असमानताएं बनी रहती हैं, जो सामाजिक मानदंडों, राजनीतिक संरचनाओं और आर्थिक बाधाओं से प्रभावित होती हैं।

महिलाओं के प्रतिनिधित्व में वृद्धि
वैश्विक स्तर पर, महिलाओं के पास 26.7% संसदीय सीटें हैं (2023 तक), जो पिछले दशकों से एक महत्वपूर्ण सुधार है।

रवांडा (61.3%), स्वीडन (47.3%), और न्यूजीलैंड (50%) जैसे देश महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व में अग्रणी हैं।

लिंग कोटा
रवांडा और नॉर्डिक देशों सहित कई देशों ने विधायी निकायों में महिलाओं का न्यूनतम प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए कोटा पेश किया है। ये उपाय बाधाओं को तोड़ने और राजनीति में महिलाओं की भूमिकाओं को सामान्य करने में महत्वपूर्ण रहे हैं।

कार्यकारी नेतृत्व
कई देशों ने महिलाओं को फिनलैंड (सना मारिन) और न्यूजीलैंड (जैसिंडा अर्डर्न) सहित उच्चतम कार्यालयों में वृद्धि देखी है। हालांकि, कार्यकारी भूमिकाओं में महिलाएं विश्व स्तर पर कम प्रतिनिधित्व करती हैं।

चुनौतियां
प्रगति के बावजूद, पितृसत्तात्मक मानदंड, वित्तीय संसाधनों तक सीमित पहुंच, और राजनीतिक दलों के भीतर प्रणालीगत पूर्वाग्रह बाधा डालते हैं।

केस स्टडीज
केस स्टडी 1: रवांडा - महिला राजनीतिक प्रतिनिधित्व में एक वैश्विक नेता

अवलोकन
रवांडा राजनीति में लैंगिक समानता में दुनिया का नेतृत्व करता है, विशेष रूप से अपने संवैधानिक सुधारों और 1994 के नरसंहार के बाद पुनर्निर्माण की प्रतिबद्धता के कारण।

प्रमुख उपलब्धियां
संसद में महिलाएं: 2023 तक, रवांडा के चैंबर ऑफ डेप्युटीज में 61.3% सीटें महिलाओं के पास हैं - विश्व स्तर पर सबसे अधिक।
• **लिंग कोटा:** रवांडा का संविधान सभी निर्णय लेने वाले निकायों में न्यूनतम 30% महिला प्रतिनिधित्व को अनिवार्य करता है, जिसने नेतृत्व में महिलाओं की भागीदारी को काफी बढ़ावा दिया है।
राजनीति से परे सशक्तिकरण: रवांडा महिलाओं के लिए शिक्षा, आर्थिक सशक्तिकरण और सामाजिक समावेशन में व्यापक प्रयासों के साथ अपने राजनीतिक कोटा का पूरक है।

चुनौतियां
प्रगति के बावजूद, सांस्कृतिक अपेक्षाएं और पारंपरिक लिंग भूमिकाएं अभी भी नेतृत्व और व्यापक समाज में महिलाओं की भागीदारी को प्रभावित करती हैं।

केस स्टडी 2: स्वीडन - राजनीति में लैंगिक समानता के लिए एक नॉर्डिक मॉडल
अवलोकन
स्वीडन लैंगिक समानता के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के लिए प्रसिद्ध है, जो व्यापक नीतियों और सांस्कृतिक बदलावों द्वारा समर्थित है।

प्रमुख उपलब्धियां
संसद में महिलाएं: स्वीडन की संसद में महिलाएं 47.3% हैं, जो राजनीति में लिंग संतुलन के लिए लगातार शीर्ष देशों में रैंकिंग करती हैं।

राजनीतिक पार्टी पहल: स्वीडन के राजनीतिक दल स्वेच्छा से संतुलित प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए लिंग कोटा को अपनाते हैं, स्थानीय, राष्ट्रीय और कार्यकारी भूमिकाओं में लगातार महिला नेतृत्व में योगदान देते हैं।

कार्य-जीवन संतुलन: माता-पिता की छुट्टी और सब्सिडी वाली चाइल्डकैअर जैसी मजबूत नीतियों ने महिलाओं को पारिवारिक जिम्मेदारियों से समझौता किए बिना नेतृत्व की भूमिकाओं को आगे बढ़ाने में सक्षम बनाया है।

चुनौतियां
राजनीति के बाहर के क्षेत्रों में लगातार अंतराल बने हुए हैं, जैसे कि कॉर्पोरेट नेतृत्व। इसके अतिरिक्त, समाज के कुछ वर्गों से प्रगतिशील नीतियों के खिलाफ प्रतिक्रिया कभी-कभी सामने आती है।

केस स्टडी 3: भारत - प्रगति और बाधाओं का मिश्रित परिदृश्य
अवलोकन
भारत के इतिहास में प्रमुख महिला नेता शामिल हैं, लेकिन महिलाएं अपनी राजनीतिक प्रणाली में काफी कम प्रतिनिधित्व करती हैं।

प्रमुख उपलब्धियां
स्थानीय शासन: भारत के पंचायती राज संस्थान महिलाओं के लिए 33% सीटें आरक्षित करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप स्थानीय नेतृत्व की भूमिकाओं में 1.5 मिलियन से अधिक महिलाएं हैं।

उल्लेखनीय नेता: इंदिरा गांधी (प्रधानमंत्री) और प्रतिभा पाटिल (राष्ट्रपति) जैसे आंकड़े उच्च पद पर महिलाओं की क्षमता को उजागर करते हैं।

महिला आरक्षण विधेयक: प्रस्तावित विधेयक संसद और राज्य विधानसभाओं के लिए 33% आरक्षण का विस्तार करना चाहता है, हालांकि यह लंबित है।

चुनौतियां

सांस्कृतिक बाधाएं: गहराई से घिरे पितृसत्ता महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी को सीमित करती है, सामाजिक अपेक्षाओं के साथ सार्वजनिक नेतृत्व पर घरेलू भूमिकाओं को प्राथमिकता देती है।

• **आर्थिक बाधाएं:** महिलाओं को वित्तीय बाधाओं का सामना करना पड़ता है और चुनावों में प्रतिस्पर्धा करने के लिए आवश्यक नेटवर्क तक सीमित पहुंच होती है।

राजनीतिक पार्टी संरचनाएं: पुरुष-वर्चस्व वाले पदानुक्रम अक्सर प्रमुख पदों के लिए महिला उम्मीदवारों का समर्थन करने में विफल रहते हैं।

केस स्टडीज की तुलना

रवांडा: उदाहरण देता है कि संवैधानिक जनादेश नेतृत्व में लिंग समानता को कैसे चला सकते हैं।
• **स्वीडन:** स्वैच्छिक पहल और सहायक नीतियों के महत्व को प्रदर्शित करता है।
• **भारत:** जमीनी स्तर पर सशक्तिकरण की क्षमता पर प्रकाश डालता है लेकिन उच्च स्तर पर प्रणालीगत परिवर्तन की आवश्यकता को रेखांकित करता है।

निष्कर्ष

अंत में, महिला राजनीतिक नेतृत्व ने विश्व स्तर पर महत्वपूर्ण प्रगति देखी है, रवांडा, स्वीडन और भारत जैसे देशों ने महिला भागीदारी बढ़ाने के लिए विविध दृष्टिकोणों का प्रदर्शन किया है। रवांडा संवैधानिक लिंग कोटा के साथ आगे है, स्वीडन स्वैच्छिक कोटा और सहायक नीतियों के माध्यम से उत्कृष्टता प्राप्त करता है, जबकि भारत विशेष रूप से पंचायती राज संस्थानों के माध्यम से स्थानीय स्तर पर मिश्रित प्रगति का प्रदर्शन करता है। इन प्रगति के बावजूद, सांस्कृतिक बाधाओं, आर्थिक बाधाओं और लिंग राजनीतिक गतिशीलता जैसी चुनौतियां बनी हुई हैं। राजनीतिक नेतृत्व में अधिक लैंगिक समानता प्राप्त करने के लिए, नीति सुधार, सामाजिक परिवर्तन और राजनीति में महिलाओं के लिए लक्षित समर्थन में निरंतर प्रयास आवश्यक हैं।

परिशिष्ट

1. डेटा टेबल्स

तालिका 1: संसद में महिला प्रतिनिधित्व (वैश्विक और भारत)

Region/Country	Percentage of Women in Parliament (%)	Source
Global Average	25.5%	Inter-Parliamentary Union (IPU)
India (Lok Sabha)	15.1%	National Election Commission
India (Rajya Sabha)	14.2%	National Election Commission
Rwanda	61.3%	IPU
Sweden	47.3%	World Economic Forum (WEF)

तालिका 2: पंचायती राज संस्थानों में महिला प्रतिनिधित्व (भारत)

State/Country	Percentage of Women in PRIs (%)	Source
India(National Average)	33%	Ministry of Panchayati Raj, India
West Bengal	45%	Ministry of Panchayati Raj, India
Madhya Pradesh	34%	Ministry of Panchayati Raj, India
Kerala	40%	Ministry of Panchayati Raj, India

संदर्भ

[1]. अंतर-संसदीय संघ (आईपीयू) ।(2023). संसद में महिलाएं: 2023 ।https://www.ipu.org से लिया गया
[2]. संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) ।(2022). लैंगिक समानता और राजनीतिक भागीदारी। https://www.undp.org से लिया गया
[3]. विश्व आर्थिक मंच (WEF) (2023). वैश्विक लिंग अंतर रिपोर्ट 2023 ।https://www.weforum.org से लिया गया
[4]. विश्व बैंक। (2021). राजनीति में महिलाएं: वैश्विक रुझान और सांख्यिकी। https://www.worldbank.org से लिया गया
[5]. संयुक्त राष्ट्र महिला (संयुक्त राष्ट्र महिला) ।(2021). निर्णय लेने में महिलाएं: राजनीति और नेतृत्व। https://www.unwomen.org से लिया गया
[6]. संयुक्त राष्ट्र महिला। (2015). दुनिया की महिला 2015-2016 की प्रगति: अर्थव्यवस्थाओं को बदलना, अधिकारों को साकार करना। न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र महिला।
[7]. चौधरी, ए., और चट्टोपाध्याय, पी. (2020) ।भारत में महिला और राजनीतिक शक्ति: एक सामाजिक राजनीतिक विश्लेषण। भारतीय राजनीति विज्ञान समीक्षा, 34 (2), 121-135।
[8]. डुफ्लो, ई।, और टोपालोवा, पी। (2004) ।अप्रशंसित सेवा: भारत में महिला राजनीतिक नेतृत्व। अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 94 (4), 2014-2042।
[9]. पांडे, आर (2003) ।क्या अनिवार्य राजनीतिक प्रतिनिधित्व महिलाओं के लिए नीतिगत प्रभाव बढ़ा सकता है? भारत से सबूत। अमेरिकी आर्थिक समीक्षा, 93 (3), 113-118।
[10]. वेल्डमैन, आर (2017) ।महिला राजनीतिक नेतृत्व: भारतीय स्थानीय शासन में कोटा की भूमिका। जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स एंड जेंडर, 8 (1), 57-80।
[11]. जैन, पी. और ठाकुर, एम. (2017) ।भारत में राजनीतिक गतिशीलता और महिला सशक्तिकरण। नई दिल्ली: ऋषि प्रकाशन।
[12]. कबीर, एन. (2005) ।समावेशी नागरिकता की खोज: भारत में महिला सशक्तिकरण के अर्थ और अभिव्यक्ति। विकास और परिवर्तन, 36 (3), 421-438।
[13]. स्वामी, आर. और शाह, ए. (2019) ।भारतीय राजनीति में महिलाएं: समानता और न्याय के लिए एक क्वेस्ट। नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
[14]. कुमार, आर. (2018) ।भारत में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी: चुनौतियां और अवसर। इंडियन जर्नल ऑफ पॉलिटिकल साइंस, 79 (1), 58-74।
[15]. राजगोपालन, आर. और शर्मा, आर. (2020) ।महिला आरक्षण विधेयक: एक महत्वपूर्ण मूल्यांकन। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ लॉ एंड सोशल साइंसेज, 9 (2), 22-37।

[16]. टैरो, एस (1998) ।आंदोलन में शक्ति: सामाजिक आंदोलन और विवादास्पद राजनीति। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रेस।
[17]. क्रूक, एमएल, और ओ'ब्रायन, डीजेड (2012) ।सभी राष्ट्रपति के पुरुष? राजनीतिक मंत्रिमंडलों में महिलाओं की नियुक्ति। जर्नल ऑफ पॉलिटिक्स, 74 (1), 145-160।
[18]. चक्रवर्ती, यू. (2001) ।भारत में महिला सशक्तिकरण: विधायी और कार्यकारी भागीदारी का एक केस स्टडी। द